न्याय दर्शन

* प्रवर्तक – गौतम
* प्रचीन न्याय के जनक गौतम, पुस्तक का नाम – न्यायसूत्र
* नव्य न्याय के जनक – गंगेश उपाध्याय, पुस्तक का नाम – 'तत्व चिंतामणि'
* 'न्याय' शब्द का अर्थ – जिसके द्वारा किसी प्रतिपाद्य विषय की सिद्धि की जा सके उसे न्याय कहते हैं।
  – वात्सायन के अनुसार – प्रमाणों के द्वारा प्रमेय की परीक्षा करना ही न्याय है।
* अन्य नाम → आन्वीक्षिकी दर्शन, हेतु विद्या, तर्कविद्या, न्यायविद्या, न्यायशास्त्र, प्रमाणशास्त्र आदि।
* प्रमाणशास्त्र – चूँकि न्याय दर्शन में प्रमाणों के द्वारा किसी विषय की समीक्षा की जाती है, इसीलिए इसे प्रमाणशास्त्र भी कहा जाता है।
* आन्वीक्षिकी दर्शन – न्याय दर्शन के अध्ययन से युक्ति-युक्त विचार करने तथा आलोचना करने की शक्ति बढ़ती है। इसलिए इसे आन्विक्षिकी दर्शन कहा जाता है।

* भारतीय दर्शन में न्याय-वैशेषिक को समान तंत्र की संज्ञा दी जाती है। इसका कारण यह है कि कई पक्षों पर न्याय-वैशेषिक दर्शन में समानता की स्थिति दिखाई देती है।

* <u>समानता के बिन्दु</u> –

i) दोनों के कारणता संबंधी सिद्धांत असत्कार्यवाद है।
ii) दोनों सृष्टि के अणुवादी सिद्धांत को स्वीकार करता है।
iii) दोनों आस्तिक, ईश्वरवादी, बहुतत्ववादी एवं वस्तुवादी दर्शन हैं।
iv) ईश्वर को जगत् का निमित्त कारण स्वीकारना
v) आत्मा मूलतः अचेतन, चैतना आत्मा का आगन्तुक धर्म

Scanned with CamScanner

vii) मोक्षावस्था में आत्मा चेतना विहीन
viii) अज्ञानता बंधन का मूल कारण तत्वज्ञान से मुक्ति

* असमानता के बिन्दु :→

i) न्याय दर्शन में ज्ञानमीमांसा प्रमुख वैशेषिक दर्शन में तत्वमीमांसा प्रमुख है।
ii) न्याय चार प्रमाण वैशेषिक दो प्रमाण स्वीकार करता है।
iii) न्याय दर्शन में 16 पदार्थ माने गए हैं वैशेषिक दर्शन में सात पदार्थ स्वीकार किए गए हैं।

* भारतीय दर्शन में प्रमाणों की स्थिति

1. चार्वाक → प्रत्यक्ष
2. बौद्ध + वैशेषिक → प्रत्यक्ष + अनुमान
3. जैन + सांख्य + जैमिनी (मीमांसा) + रामानुज → प्रत्यक्ष + अनुमान + शब्द
4. न्याय दर्शन → प्रत्यक्ष + अनुमान + शब्द + उपमान
5. प्रभाकर (मीमांसक) → प्रत्यक्ष + अनुमान + शब्द + उपमान + अर्थापत्ति
6. कुमारिल + शंकर → प्रत्यक्ष + अनुमान + शब्द + उपमान + अर्थापत्ति + अनुपलब्धि

* ज्ञान क्या है?
→ गौतम ने न्याय सूत्र में ज्ञान, बुद्धि एवं उपलब्धि को समानार्थक माना है। ज्ञान शब्द का अर्थ जानना या ग्रहण करना है। ज्ञान के संदर्भ में न्याय का मत –

i) यह विषय को प्रकाशित करता है, स्वप्रकाशक नहीं है।
ii) ज्ञान विषय उत्पन्न नहीं करता, उसको प्रकाशित करता है।
iii) यह हमारे समस्त व्यवहार का साधन है।
iv) ज्ञान आत्मा का आगुंतक गुण है। ज्ञान 24 गुण में से एक है।
v) यह स्वतः प्रमाणिक न होकर परतः प्रमाणिक होता है।

Scanned with CamScanner

* ज्ञान के बारे में विभिन्न भारतीय दर्शनों में स्थिति -

1. ज्ञान / चेतना भौतिक तत्वों का एक आगंतुक गुण है - चार्वाक
2. ज्ञान आत्मा का आगंतुक गुण है - न्याय-वैशेषिक, प्रभाकर
3. ज्ञान आत्मा का अनिवार्य गुण है - जैन, रामानुज
4. ज्ञान आत्मा की एक पर्याय है और यह आत्मा की अनिवार्यत: एक क्रिया या व्यापार है। - कुमारिल भट्ट
5. आत्मा स्वयं ज्ञान स्वरूप / चैतन्यस्वरूप है - सांख्य, शंकर

* ज्ञान के प्रकार → i) अनुभव ii) स्मृति

↓

अनुभव → जिस ज्ञान में विषय अनिवार्यत: विद्यमान हो

↓

स्मृति → जिसका विषय वर्तमान न होकर अतीत होता है।

↓

अनुभव के प्रकार → यथार्थ अनुभव → प्रमा / वैध ज्ञान
→ अयथार्थ अनुभव → अप्रमा / अवैध ज्ञान

↓

प्रमा → यथार्थ अनुभव को प्रमा कहते है और प्रमा की प्राप्ति के साधन को प्रमाण कहते है। चूँकि न्याय दर्शन में प्रमा के चार प्रकार है अत: प्रमाण भी चार है।

Note

1. प्रमा → i) प्रत्यक्ष ii) अनुमिति iii) शब्द-बोध iv) उपमिति
2. प्रमाण → i) प्रत्यक्ष ii) अनुमान iii) शब्द iv) उपमान
3. अप्रमा → i) संशय ii) विपर्यय (भ्रम) iii) तर्क iv) स्मृति

Scanned with CamScanner

* अप्रमा → अयथार्थ ज्ञान को अप्रमा कहा जाता है इसके न्याय दर्शन में चार प्रकार माने गए है -

i) संशय → संशयात्मक ज्ञान अनिश्चित एवं संदिग्ध होता है। इसमें एक ही वस्तु के संदर्भ में मन में दो या अधिक विरोधी विकल्प आते हैं।

ii) विपर्यय → यह मिथ्या / भ्रान्त ज्ञान है। जिसमें जिसका अभाव है उसे उससे युक्त समझना मिथ्या ज्ञान है। इसमें किसी वस्तु का उससे भिन्न रूप में अनुभव होता है। जैसे - रस्सी में सर्प का ज्ञान। नैयायिकों का उस संदर्भ में दिया गया सिद्धांत अन्यथा ख्यातिवाद कहलाता है।

iii) तर्क → प्रतिवादी के कथन को खण्डित करके अपने पक्ष को परोक्ष रूप से समर्थन करने के लिए वादी द्वारा प्रयुक्त काल्पनिक युक्ति को तर्क कहते है। प्रमा न होने के कारण नैयायिकों ने इसे अप्रमा में सम्मिलित किया है।

iv) स्मृति → पूर्व अनुभव के संस्कार से उत्पन्न ज्ञान स्मृति है। इसमें ज्ञान का विषय वर्तमान नहीं, बल्कि अतीत होता है। स्मृति भी प्रमा नहीं है। स्मृति संस्कार जन्य ज्ञान है। स्मृति यथार्थ भी हो सकती है और अयथार्थ भी। स्मृति के यथार्थ होने पर भी नैयायिक इसे प्रमा नहीं मानते।

Scanned with CamScanner